शांतिपाठ भाषा

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्प क्षेपण करते रहना चाहिये)

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुणव्रत संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखतनयन कमलदल लाजै।।१।।
पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्रनरेन्द्र पूज्यजिन नायक, नमो शांतिहित शांतिविधायक।।२।।
दिव्य विटप पहुपन की वरभा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामण्डल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।।३।।
शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजौं शिरनाई।
परम शांति दीजै हम सबको, पढ़े तिन्हें पुनि चार संधको।।४।।

बसन्ततिलका

पूजें जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके।
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाव्ज जाके।।
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप।
मेरें लिए करहिं शांति सदा अनूप।।५।।

इन्द्रवज्रा

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीन को औ यतिनायकों को।
राजाप्रजा राष्ट्रसुदेश कोले, कीजेसुखी हेजिनशांतिको दे।।६।।

सग्धरा छन्द

होवै सारी प्रजा को सुख बलयुत हो धर्म-धारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पै तिलभर न रहे व्याधियों का अन्देशा।।
होवै चोरी न जारी सुसमय बरते हो न दुष्काल भारी।
सारे ही देश धारैं जिनवर वृषको जो सदा सौख्यकारी।।७।।

दोहा

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज।।८।।

अशेष्ट प्रार्थना - मन्दाक्रान्ता

शास्त्रों का हो पठन सुखदा लाभ सत्संगती का
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढ़ाँकू सभी का।
बोलूं प्यारे वचन हित के, आपका रूप घ्याऊं।
तोलों सेऊं चरण जिनके, मोक्ष जोलों न पाऊं ।।९।।

आर्य्या

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलौं लीन रहौ प्रभु जबलौं पाया न मुक्ति पद मैंने।।१०।।
अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमाकरो प्रभुसो सब, करुणाकरि पुनिछुडाहु भवदुख से।।११।।
हे जगबन्धु जिनेश्वर, पाऊं तब चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मो का क्षय सुबोध सुखकारी।।१२।।

(परिपुष्पांजली क्षेपण)

यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहियें।

भजन

नाथ ! तेरीपूजा को फल पायो, मेरेयो निश्चय अब आयो।
मेंढ़क कमल पांखुड़ी मुख ले वीर जिनेश्वर धायो।
श्रेणिक गजके पग तल मूवो, तुरत स्वर्ग पद पायो। नाथ...
मेनासुन्दरी शुभ मन सेती, सिद्ध चक्र गुण गायो।
अपने पति को कोढ़ गमायो, गंधोदक फल पायो। नाथ...
अष्टापद में भरत नरेश्वर, आदिनाथ मन लायो।
अषटद्रव्य से पूजा प्रभु जी, अवधिज्ञान दरशायो। नाथ...
अंजन से सब पापी तारे मेरो मन हुलसायो।
महिमा मोटि नाथ तुम्हारी, मुक्तिपुरी सुखपायो। नाथ...
थकि थकि हारे सुर नर खगपति, आगम सीख जतायो।
देवेन्द्रकीर्ति गुरु ज्ञान 'मनोहर', पूजा ज्ञान बतायो। नाथ...